अध्याय
03

भूमंडलीकृत विश्व का बनना

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी आधुनिक युग से पहले की दुनिया के बारे में जान सकेंगे।
- विद्यार्थी भौगोलिक खोजों और उनके आर्थिक महत्व को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी वैश्विक अर्थव्यवस्था के उदय की विभिन्न परिस्थितियों को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी उपनिवेशवादी शोषण से परिचित होंगे।
- विद्यार्थी दो विश्व युद्धों के बीच वैश्विक अर्थव्यवस्था की विभिन्न परिस्थितियों को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी ब्रेटन वुड्स सम्मेलन की भूमंडलीकरण के संदर्भ में भूमिका को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ को चुनौती प्रस्तुत करने वाली वैश्विक अर्थव्यवस्था में उभरती हुई नई आर्थिक शक्तियों की भूमिका को जान सकेंगे।
- विद्यार्थी भूमंडलीकरण के विविध प्रभावों को समझते हुए विश्व की एकीकृत समाज के रूप में स्थापित होने की विविध संभावनाओं को जान सकेंगे।

आधुनिक युग से पहले की दुनिया:-

- भूमंडलीकरण कोई अचानक घटने वाली घटना नहीं है। वस्तुतः यह एक सतत प्रक्रिया है जो क्रमिक रूप में विश्व को एकीकृत समाज के रूप में स्थापित करने का प्रयत्न कर रही है।

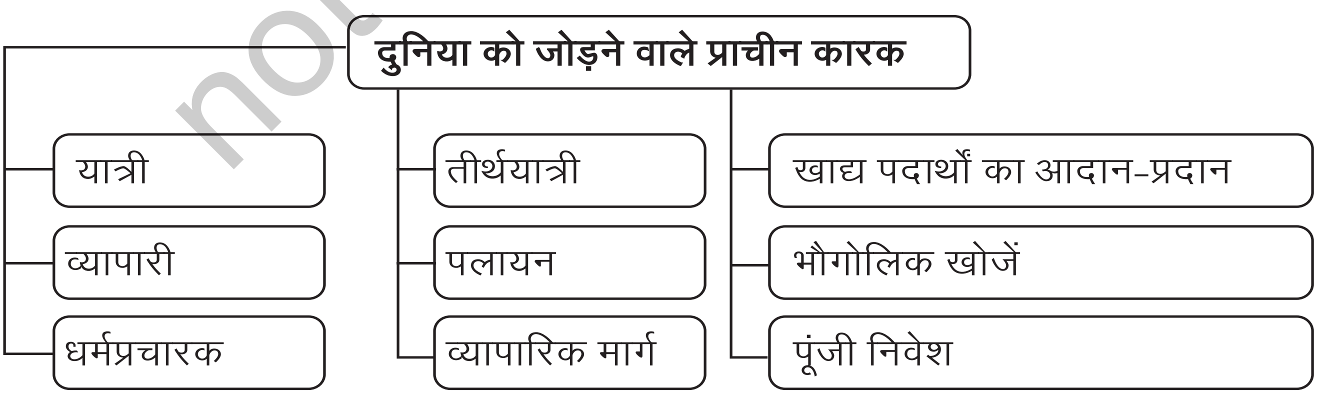

© JCERT not to be republished

- भूमंडलीकरण की संकल्पना द्वितीय विश्व युद्ध के बाद प्रस्तुत हुई। परंतु यह प्रक्रिया मानव सभ्यता के आरंभ से ही जारी है। वैश्विक ग्राम शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **मार्शल लोहान** ने किया।
- हड़प्पा सभ्यता एवं मेसोपोटामिया की सभ्यता के मध्य व्यापारिक संबंध इसकी प्राचीनता को स्पष्ट करते हैं।
- इस दौर में भारत में बाहर के देशों से कई खाद्य पदार्थों का आगमन हुआ।

बाहर के देशों से भारत आने वाले खाद्य पदार्थ

- आलू
- सोया
- मूंगफली
- शकरकंद
- मक्का
- टमाटर
- मिर्च

ये खाद्य पदार्थ अमेरिका से भारत आए।

अमेरिका

- उत्तरी अमेरिका
- दक्षिणी अमेरिका
- कैरेबियन द्वीपसमूह

- 1840 के दशक के मध्य में किसी बीमारी के कारण आयरलैंड में जब आलू की फसल खराब हो गई तो लाखों लोग भूखमरी की वज़ह से मर गए।

भौगोलिक खोजें

- विश्व सहजता से एक दूसरे से जुड़ गया।
- व्यापारिक वस्तुओं का आदान-प्रदान तीव्रता से वैश्विक स्तर पर होने लगा।
- ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीक का आदान-प्रदान वैश्विक स्तर पर होने लगा।
- संस्कृतियों के आदान -प्रदान से विश्व के देश आपस में मजबूती से जुड़ने लगे। वैश्विक अर्थव्यवस्था की पृष्ठभूमि निर्मित हुई।

1492 में क्रिस्टोफर कोलंबस ने अमेरिका की खोज की।

- कोलंबस ने अमेरिका को नई दुनिया कहा।

अमेरिकी खोज का प्रभाव

- पेरू और मेक्सिको से उत्पादित चांदी ने यूरोप और पश्चिम एशिया के साथ व्यापार में वृद्धि की।
- यूरोपीय देशों ने अमेरिका पर सैनिक शक्ति के अलावा चेचक जैसी महामारी के सहारे भी विजय प्राप्त की।
- 18 वीं शताब्दी में अफ्रीका से पकड़कर लाए गए गुलामों को काम में लगा कर यूरोपीय बाजारों के लिए कपास और चीनी का उत्पादन किया जाने लगा।
- चीन की घटती आर्थिक शक्ति की वजह से विश्व व्यापार का केंद्र अब पश्चिम की ओर अग्रसर हुआ। अब यूरोप विश्व व्यापार के सबसे बड़ा केंद्र के रूप में स्थापित हुआ।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

• 19वीं शताब्दी में विश्व में तीव्र परिवर्तन हुए।

19वीं शताब्दी में विश्व में आए परिवर्तन

- आर्थिक प्रवाह में तीव्र वृद्धि दर्ज की गई
- व्यापार का प्रवाह तेजी से बढ़ा।
- श्रम के प्रवाह में वृद्धि दर्ज की गई
- पूंजी के प्रवाह में भी वृद्धि हुई।
- तकनीक के प्रवाह में वृद्धि हुई।

विश्व अर्थवयवस्था का उदय:-

19वीं शताब्दी में खाद्य अर्थव्यवस्था

- ब्रिटेन की आबादी 18 वीं शताब्दी से ही तेजी से बढ़ रही थी।
- ब्रिटेन अन्य देशों की तरह खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर नहीं बन सका था।
- ब्रिटेन में खाद्य पदार्थों की मांग में तीव्र वृद्धि हुई।
- खाद्य पदार्थों की मांग की पूर्ति हेतु ब्रिटेन में काफी कम कीमतों पर खाद्य पदार्थों का आयात किया जाने लगा।
- उत्पादित फसलों का उचित मूल्य न मिलने की वजह से ब्रिटेन में खेती में तीव्र गिरावट दर्ज की गई।
- ब्रिटेन में कृषि क्षेत्र में बेरोजगार हुए लोगों ने शहरों की ओर पलायन किया।
- दूसरे देशों से खाद्य पदार्थों की ढुलाई के लिए ब्रिटेन ने उन देशों में सड़क, रेलवे एवं बंदरगाहों की स्थापना की।
- श्रम के प्रवाह में तीव्र वृद्धि हुई।
- यूरोप के लगभग 5 करोड़ लोग अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में बस गए।

© JCERT not to be republished

- ब्रिटेन ने भूस्वामियों के दबाव में लाए गए कॉर्न लॉ को भी समाप्त कर दिया।
- कॉर्न लॉ के तहत ब्रिटेन में मक्का के आयात पर प्रतिबंध लगाया गया था।
- 1890 तक वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था सामने आ चुकी थी।

वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था

- वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था का उद्भव 1890 ईस्वी तक हुआ।
- इस दौर में ग्रामीण आबादी का विस्थापन नगरों की ओर हुआ।
- दूसरे देशों के श्रमिकों का पलायन दूसरे देशों में हुआ।
- कृषि के क्षेत्र में पूंजी प्रवाह में वृद्धि हुई।
- कृषि क्षेत्र में नवीन तकनीकों के विकास से अर्थव्यवस्था को गति मिली।
- खाद्य पदार्थों का आयात-निर्यात वैश्विक स्तर पर होने लगा।
- जंगलों की सफाई कर औद्योगिक मजदूरों को भी कृषि उत्पादन में लगाया गया।
- रेलवे, बंदरगाह ,सड़क आदि का विकास हुआ।
- जहाजों पर दक्षिण यूरोप, एशिया, अफ्रीका और कैरेबियन द्वीपसमूह के मजदूर बहुत कम मजदूरी पर काम करने लगे।
- भारत में ब्रिटिश सरकार द्वारा पंजाब में अर्द्ध-रेगिस्तानी क्षेत्रों में नहरों का जाल बिछा दिया ताकि परती जमी
- 1820 ई० से 1914 ई० के बीच विश्व व्यापार में 25से40 गुना वृद्धि हुई।
- इस व्यापार में लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा गेहूं, कपास तथा कोयले का था।
- रबड़ के उत्पादन पर भी विशेष बल दिया गया।

भूमंडलीकरण के विकास में तकनीक की भूमिका:-

- 19 वीं शताब्दी में आए वैश्विक आर्थिक परिवर्तनों में नवीन तकनीकों के विकास की अहम भूमिका रही।

© JCERT not to be republished

तकनीकी विकास की भूमिका

- प्रायः तकनीकी विकास सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन में आए विभिन्न परिवर्तनों का परिणाम होती है।
- औपनिवेशिकरण के कारण रेल, सड़क, जलपोतों के उन्नत तकनीकी विकास किए गए।
- इससे उत्पादों को कम लागत पर दूर-दूर के बाजारों में पहुंचाया जाने लगा।
- पानी के जहाजों में रेफ्रिजरेशन की सुविधा होने से मांस के आयात-निर्यात में सुविधा हुई।
- स्मिथफिल्ड में लंदन का सबसे पुराना पशु बाज़ार था।
- यूरोप में निर्धनों को कम कीमत पर मांस मिलने से भोजन की विविधता उपलब्ध हुई।
- जीवन स्तर में सुधार से उन देशों में शान्ति स्थापित होने लगी।
- अपने देश में शान्ति और समृद्धि स्थापित होने के पश्चात् यूरोपीय देशों ने साम्राज्यवादी उद्देश्यों को हासिल करने का प्रयत्न किया।

19वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में उपनिवेशवाद-

उपनिवेशवाद का काला सच

- विश्व के कई देशों की स्वतंत्रता एवं रोजगार के अवसरों को उपनिवेशवादियों ने छिन लिया।
- 1885 में यूरोप के शक्तिशाली देशों की बर्लिन में एक बैठक हुई जिसमें अफ्रीका को इन्होंने आपस में लकीरें खींच कर बांट लिया।
- ब्रिटेन और फ्रांस ने अपना औपनिवेशिक क्षेत्र काफी विस्तृत कर लिया।
- बेल्जियम और जर्मनी नई औपनिवेशिक शक्तियों के रूप में सामने आए।
- 1890 के दशक के अंतिम वर्षों में अमेरिका भी औपनिवेशिक शक्ति बन गया।

- न्यूयॉर्क हैराल्ड के पत्रकार स्टैनली की अफ्रीका में खोजी पत्रकारिता साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा से भी प्रेरित थी।

अफ्रीकी लोगों का औपनिवेशिक शोषण

- अफ्रीका के बगानी खेतों और खदानों पर यूरोपीय लोगों ने कब्जा कर लिया।
- यूरोपीय लोगों ने अफ्रीकियों से जबरन मजदूरी कराने हेतु कई कठोर उपाय किए।

cont..

© JCERT not to be republished

अफ्रीकियों पर भारी कर लगाए गए।

परिवार के एक ही व्यक्ति को पैतृक सम्पत्ति में उत्तराधिकार देने का कानून बनाया गया।

खान में काम करने वाले कर्मियों को बाड़ों में बंद कर दिया।

1890 के दशक में रिंडरपेस्ट या मवेशी प्लेग-जैसा विनाशकारी पशुरोग फैल गया।

इससे पशुधन की भारी क्षति हुई।

पशुधन की क्षति होने से अफ्रीकी लोगों की आजीविका के साधन खत्म हो गए।

अब यूरोपीय लोगों ने अफ्रीकियों को अपने शोषण के विस्तृत जाल में बांध दिया।

भारत से अनुबंधित श्रमिकों का भेजा जाना:-

- भारत से अनुबंधित श्रमिकों को भेजा जाना 19 वीं शताब्दी के औपनिवेशिक शोषण की कठोरता की स्पष्ट अभिव्यक्ति है।

भारत से अनुबंधित श्रमिकों का भेजा जाना

बागानों, खदानों और रेलवे निर्माण परियोजनाओं में काम करने के लिए दूर-दूर के देशों में भेजा जाता था।

5 साल काम करने के बाद इन्हें स्वदेश लौटने की अनुमति होती थी।

अधिकांश अनुबंधित श्रमिक बिहार ,पूर्वी उत्तर प्रदेश ,मध्य भारत और तमिलनाडु के सूखाग्रस्त इलाकों से जाते थे।

ये श्रमिक ऋण के भार से दबते चले जा रहे थे।

इन श्रमिकों को मुख्य रूप से त्रिनिडाड, गुयाना,सूरीनाम, मॉरीशस, सीलोन, मलायाऔर फ़िजी भेजा जाता था।

इन मजदूरों की भर्ती एजेंटों के माध्यम से झूठ बोलकर की जाती थी।

कई विद्वानों ने इस अनुबंध को नई दास प्रथा का नाम दिया है।

इन श्रमिकों ने वहां जाने के बाद कठिन जीवन से सामंजस्य स्थापित करने हेतु उन देशों की संस्कृतियों से समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया।

इन लोगों ने मुहर्रम के अवसर पर होसे नामक जुलूस निकालना शुरू किया।

इन लोगों ने रस्ताफरियानवाद नामक विद्रोही धर्म से भी सामंजस्य स्थापित करना शुरू किया।

इस विद्रोही धर्म को रैगे गायक बॉब मार्ले ने प्रसिद्धि की ऊंचाई पर पहुंचा दिया।

इनमें से ज्यादातर श्रमिक अनुबंध समाप्त होने के बाद भी वापस स्वदेश नहीं लौटे।

इन श्रमिकों को ही गिरमिटिया मजदूर कहा जाता था। गिरमिटिया शब्द एग्रीमेंट शब्द से विकसित हुआ है।

© JCERT not to be republished

भारतीय व्यापार ,उपनिवेशवाद और वैश्विक व्यवस्था:-

तकनीकी विकास की भूमिका

- उपनिवेशवाद असमान आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था पर आधारित शोषणवादी व्यवस्था है, जिसमें उपनिवेश बनाए गए देशों के अधिकतम आर्थिक दोहन पर बल दिया जाता है।
- ब्रिटिश नीतियों की वज़ह से भारतीय महीन कपास के निर्यात में भारी कमी आई।
- सीमा शुल्क की व्यवस्था के कारण ब्रिटिश बाजारों से बाहर हो जाने के बाद भारतीय कपड़ों को दूसरे अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी भारी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा।
- 1800 ई० के आसपास निर्यात में सूती कपड़े का प्रतिशत 30% था, जो 1870 ई० तक घटकर केवल 3% रह गया।
- इस दौर में भारत से कच्ची वस्तुओं के निर्यात में तीव्र वृद्धि दर्ज की गई।
- 1812 ई० से 1871 ई० के बीच कच्चे कपास का निर्यात 5% से बढ़कर 35% तक पहुंच गया।
- 1820 के दशक से चीन को बड़ी मात्रा में भारत से अफीम का निर्यात किया जाने लगा।
- अफीम के निर्यात से प्राप्त राशि से चीन से चाय और दूसरे पदार्थों का आयात किया जाता था।
- भारतीय बाजार ब्रिटिश औद्योगिक उत्पादों से भर गए।
- भारत के साथ ब्रिटेन हमेशा व्यापार अधिशेष की अवस्था में रहा।

होम चार्जेज

- ब्रिटेन के व्यापार से प्राप्त अधिशेष से होम चार्जेज का समाधान किया जाता था।
- ब्रिटिश अधिकारियों एवं व्यापारियों द्वारा भारत से अर्जित की गई राशि जो ब्रिटेन भेजी जाती थी।
- ब्रिटिश अधिकारियों के पेंशन
- भारत पर विदेशी ऋणों के ब्याज

© JCERT not to be republished

दो विश्वयुद्धों के बीच वैश्विक अर्थव्यवस्था:-

- प्रथम विश्वयुद्ध ने दुनिया में ऐसे आर्थिक संकट पैदा किए जिसके समाधान में 30 वर्ष से अधिक समय लग गए।
- प्रथम विश्व युद्ध दो गुटों के बीच लड़ा गया।

मित्र राष्ट्र
- ब्रिटेन
- फ्रांस
- रूस

धुरी राष्ट्र
- जर्मनी
- इटली
- हंगरी
- ऑटोमन तुर्क

1 प्रथम विश्व युद्ध की विभीषिका में आधुनिक औद्योगिक प्रगति का महत्वपूर्ण योगदान था।

2 प्रथम विश्व युद्ध में 90 लाख से ज्यादा लोग मारे गए और दो करोड़ लोग घायल हुए।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् आर्थिक परिवर्तन
- परिवार के सदस्य घट जाने की वजह से परिवार की आय में कमी आई।
- पुरुषों के युद्ध में लिप्त हो जाने की वजह से महिलाएं भी घर के बाहर के काम में शामिल होने लगीं।
- प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटेन ने अमेरिकी बैंकों और अमेरिकी जनता से भारी ऋण लिया।
- अब अमेरिका ऋणी देश से ऋण -दाता देश बन गया।
- संयुक्त राज्य अमेरिका की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी हो गई।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद की आर्थिक स्थिति
- उत्पादन में भारी कमी आई।
- बेरोजगारी में भारी वृद्धि हुई।
- सरकार द्वारा शक्तिशाली कर लगाए जाने लगे।
- 1921 में हर पांच में से एक ब्रिटिश मजदूर के पास काम नहीं था।
- फसलों के दाम गिर गए और ग्रामीण आय कम हो गई। फलतः किसान ऋण जाल में फंसते चले गए।

© JCERT not to be republished

- प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व अमेरिका दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी।
- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटेन अमेरिका का भारी कर्जदार बन गया।

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् अमेरिकी अर्थव्यवस्था की स्थिति

- उत्पादन में तीव्र वृद्धि दर्ज की गई।
- कार निर्माता हेनरी फोर्ड बृहत उत्पादन के प्रणेता थे।
- टी-मॉडल नाम की कार बृहत उत्पादन से निर्मित पहली कार थी।
- फोर्ड की उत्पादन पद्धति आधुनिक असेंबली लाइन पर स्थापित थी जो मजदूरों के लिए थकान वाली एवं जोखिम भरी व्यवस्था थी।
- 1919 में अमेरिका में 20 लाख कारों का उत्पादन होता था जो 1929 में बढ़कर 50 लाख प्रति वर्ष हो गया।
- 7. ऋण लेकर घरेलू उपकरणों को खरीदा जाने लगा।
- ऋण पर मकान भी बनाए जाने लगे।
- अब अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा ऋण दाता देश बन गया।

- 1929 में दुनिया एक ऐसी आर्थिक महामंदी में फंस गई जिससे उसका इससे पूर्व में परिचय नहीं हुआ था।

1929 की विश्व आर्थिक महामंदी

- दुनिया के अधिकांश हिस्सों में उत्पादन , रोजगार, आय और व्यापार में भारी गिरावट दर्ज की गई।
- कृषि क्षेत्र और जन समुदाय पर इसका व्यापक रूप से बुरा असर पड़ा।
- अत्यधिक उत्पादन की स्थिति में बाज़ार में कृषि उत्पादों की कीमत काफी गिर गई।
- खरीददारों के अभाव में कृषि उपज सड़ने लगीं।
- 1920 के दशक के मध्य में कई देशों ने अमेरिका से ऋण लिए थे।
- जब अमेरिकी उद्यमी महामंदी की चपेट में आ गए, तो अन्य देशों पर अमेरिकी ऋण चुकाने का दबाव उत्पन्न हुआ।
- अब अमेरिका से ऋण लिए देशों में भयावह आर्थिक संकट उत्पन हुआ।

© JCERT not to be republished

- अमेरकी पूंजी के लौट जाने से सामान्यतः पूरी दुनिया इससे प्रभावित हुई।
- यूरोप के कई बैंक डूब गए।
- जब अमेरिका ने अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए आयातित पदार्थों पर दोगुना सीमा शुल्क वसूल करना शुरू किया तो विश्व व्यापार पर गहरा संकट उत्पन्न हुआ।
- अमेरिका में हजारों बैंक दिवालिया हो गए। नागरिक तबाह हो गए। बेरोजगारी में अप्रत्याशित वृद्धि हुई।

भारत पर महामंदी के प्रभाव:

- वैश्विक महामंदी का भारत पर व्यापक असर पड़ा।

भारत पर महामंदी का प्रभाव

- 1928 ई० से 1934 ई० के बीच भारत के आयात-निर्यात घटकर लगभग आधे रह गए थे।
- 1928 ई० से 1934 ई० के बीच भारत में गेहूं की कीमत 50% नीचे गिर गई।
- भारत में शहरी निशा निवासियों की तुलना में किसानों को महामंदी का दुष्प्रभाव ज्यादा झेलना पड़ा।
- इन परिस्थितियों में भी ब्रिटिश सरकार ने भारतीय किसानों को लगान में कोई छूट नहीं दी।
- भारतीय सोने के निर्यात से ब्रिटिश सरकार को फायदा हुआ। परंतु किसानों की दशा में कोई सुधार नहीं हुआ।
- भारतीय किसान ऋणग्रस्तता की जाल में बुरी तरह फंस गए
- **9. महात्मा गांधी ने 1931में इन्हीं परिस्थितियों के बीच जनता के असंतोष को संचित करते हुए सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की।**
- **8. 1931 में भारत में वैश्विक महामंदी अपने चरम पर पहुंच गई।**

© JCERT not to be republished

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विश्व अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण:-

- द्वितीय विश्व युद्ध दो गुटों के बीच लड़ा गया।

मित्र राष्ट्र
- ब्रिटेन
- संयुक्त राज्य अमेरिका (USA)
- सोवियत संघ (रूस)

धुरी राष्ट्र
- जर्मनी
- जापान
- इटली

- इस महायुद्ध में लगभग 6 करोड लोग मारे गए। यह संख्या 1939 की वैश्विक आबादी का लगभग 3% थी।
- द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् दो महा शक्तियों का उदय हुआ।

दो महाशक्तियों का उदय
- पश्चिमी विश्व में संयुक्त राज्य अमेरिका आर्थिक, राजनीतिक और सैनिक दृष्टि से महाशक्ति के रूप में स्थापित हुआ।
- सोवियत संघ द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् दुनिया में सैनिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से महाशक्ति के रूप में स्थापित हुआ।
- सोवियत संघ पर वैश्विक महामंदी का दुष्प्रभाव नहीं पड़ा था।

द्तीय विश्व युद्ध के पश्चात् वैश्विक व्यवस्था और ब्रेटन- वुड्स संस्थान
- भारी उत्पादन पर आधारित किसी भी औद्योगिक समाज को व्यापक उपभोग के बिना कायम रखना संभव नहीं है।
- व्यापक उपभोग के लिए पर्याप्त आमदनी की आवश्यकता जरूरी है।
- आर्थिक स्थिरता केवल सरकारी हस्तक्षेप के द्वारा ही सुनिश्चित की जा सकती थी।
- पूर्ण रोजगार का लक्ष्य तभी प्राप्त किया जा सकता है जब सरकार के पास वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी और श्रम की आवाजाही को नियंत्रित करने की शक्ति उपलब्ध हो।

© JCERT not to be republished

ब्रेटन -वुड्स -सम्मेलन

- 1944 में अमेरिका स्थित न्यू हेंपशायर के ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर यह सम्मेलन आयोजित हुआ।
- इस सम्मेलन में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की स्थापना की गई।
- इसी सम्मेलन में युद्ध के पश्चात् विश्व के पुनर्निर्माण के लिए अंतरराष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक का गठन किया गया। इसे ही विश्व बैंक के नाम से जाना गया।
- विश्व बैंक और आई.एम.एफ .को ब्रेटन -वुड्स की जुड़वा संतान भी कहा जाता है।
- द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् स्थापित अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था को ब्रेटन -वुड्स व्यवस्था भी कहा जाता है।
- विश्व बैंक और आईएमएफ ने 1947 में औपचारिक रूप से काम करना शुरू किया।
- संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व बैंक और आई.एम.एफ. के किसी भी फैसले पर वीटो कर सकता है।
- ब्रेटन- वुड्स व्यवस्था निश्चित विनिमय दरों पर आधारित होती थी।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् आरंभिक वर्षों में स्थिति-

ब्रेटन- वुड्स व्यवस्था के प्रारंभिक प्रभाव

- 1950 ई० से 1970 ई० के बीच विश्व व्यापार की विकास दर 8% से भी अधिक वार्षिक रही।
- 1950 ई० से 1970 ई० के बीच वैश्विक आय में लगभग 5% की दर से वृद्धि हो रही थी।
- इस दौर में अधिकांश औद्योगिक देशों में बेरोजगारी दर औसतन 5% से भी कम रही।
- इस दौर में विकासशील देशों ने आधुनिक तकनीक से चलने वाले संयंत्रों और उपकरणों के आयात पर अधिक पूंजी का निवेश किया।

© JCERT not to be republished

- वीटो शक्ति-यह एक विशेषाधिकार है, जिसके तहत किसी एक वीटो शक्ति प्राप्त सदस्य की असहमति किसी भी प्रस्ताव को खारिज कर सकती है।
- उपनिवेशवाद का विरोध और स्वतंत्रता:-
- दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद भी विश्व के कई देश यूरोपीय औपनिवेशिक शासन के अधीन थे।

नवस्वतंत्र देशों की स्थिति

- सभी नवस्वतंत्र देशों के समक्ष गरीबी और संसाधनों की समस्या व्यापक रूप में मौजूद थी।
- आई.एम.एफ .और विश्व बैंक इन नवस्वतंत्र देशों की समस्या के समाधान में उस दौर में सफल नहीं हो रहे थे।
- उपनिवेशवाद के पतन के पश्चात् भी नवस्वतंत्र देशों की अर्थव्यवस्था पर पूर्व में औपनिवेशिक शासन करने वाले देशों का वर्चस्व बना हुआ था।
- वस्तुतः नवस्वतंत्र देशों को आर्थिक -सामाजिक समस्याओं से बाहर निकालने के लिए स्थापित वैश्विक संस्थानों पर पूर्व के औपनिवेशिक राष्ट्रों का वर्चस्व स्थापित था।
- इस दौर में बहुराष्ट्रीय अमेरिकी कंपनियां भी विकासशील राष्ट्रों के प्राकृतिक संसाधनों का बहुत कम कीमत पर दोहन करती थी।
- अपनी समस्याओं के समाधान हेतु विकासशील देशों ने एक नई अंतरराष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली समूह 77 का गठन किया।
- किसी दूसरे देश से आने वाली चीजों पर वसूल किया जाने वाला शुल्क आयात शुल्क कहलाता है।

आयात शुल्क किन जगहों पर लिया जाता है?

- सीमा पर
- बंदरगाह पर
- 4. हवाई अड्डे पर

© JCERT not to be republished

- दुनिया के कई देशों में एक साथ व्यापार करने वाली कंपनियों को बहुराष्ट्रीय कंपनियां कहा जाता है।

ब्रेटन वुड्स का समापन और वैश्वीकरण की शुरुआत:-

विनिमय दर की व्यवस्था का विफल हो जाना

- 1960 के दशक में ही विदेशों में अपनी गतिविधियों की बड़ी लागत के कारण अमेरिका की वित्तीय और व्यापारिक प्रतिस्पर्धी क्षमता कमजोर हो गई।
- 3. अमेरिकी डॉलर पहले की तुलना में अब ज्यादा शक्तिशाली नहीं रहा।
- 4. अब अस्थिर विनिमय दर की व्यवस्था शुरू हो गई।

विनिमय दर

- अंतरराष्ट्रीय व्यापार की सुविधा के लिए विभिन्न देशों की राष्ट्रीय मुद्राओं को एक दूसरे से जोड़ा जाना।
- जब विनिमय दर स्थिर होती है और उस को नियंत्रित करने के लिए सरकारों को हस्तक्षेप करना पड़ता है तो उसे स्थिर विनिमय दर कहते हैं।
- जब विनिमय दर सरकारों के हस्तक्षेप के बिना विभिन्न मुद्राओं की मांग या आपूर्ति के आधार पर घटती -बढ़ती रहती है तो उसे लचीली या परिवर्तनशील विनिमय दर कहते हैं।

1970 के दशक में विकासशील देशों की स्थिति

- अब विकासशील देशों को अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों के अलावा पश्चिम के व्यवसायिक बैंकों और निजी ऋण दाता संस्थानों से कर्ज न लेने के लिए बाध्य किया जाने लगा।
- विकासशील देशों के समक्ष समय-समय पर ऋण संकट पैदा होने लगा जिसके कारण आय में गिरावट दर्ज की गई।
- अब विकासशील देशों में गरीबी और बेरोजगारी में वृद्धि हुई है।
- अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशों में यह समस्या सर्वाधिक दिखाई दी।

© JCERT not to be republished

औद्योगिक विश्व में बेरोजगारी की समस्या

- 1970 के दशक से बेरोजगारी में वृद्धि होने लगी और 1990 के दशक तक यह समस्या काफी बढ़ गई।
- 1970 के दशक से बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने एशिया के ऐसे देशों में उत्पादन पर ध्यान दिया जहां कम वेतन पर श्रमिक उपलब्ध थे।
- 1949 की क्रांति के बाद विश्व अर्थव्यवस्था से अलग-थलग रहे चीन में नई आर्थिक नीतियों और सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् अब चीन भी विश्व अर्थव्यवस्था का अंग बन गया।
- चीन जैसे देशों में जहां वेतन तुलनात्मक रूप से कम थे, बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने वहां जमकर निवेश करना शुरू किया
- टेलीविजन, मोबाइल फोन और खिलौने चीन की अल्प लागत अर्थव्यवस्था और कम वेतनों पर नियुक्त श्रमिकों का प्रतिफल है।
- कम वेतन वाले देशों में उद्योग स्थापित हो जाने से वैश्विक व्यापार और पूंजी प्रवाहों पर प्रभाव पड़ा।
- भारत, चीन और ब्राजील जैसे देशों की अर्थव्यवस्थाओं में आए व्यापक परिवर्तनों के कारण पिछले दो दशकों में विश्व की अर्थव्यवस्था पूरी तरह बदल चुकी है।

© JCERT not to be republished

बहुविकल्पीय प्रश्न-

1. भूमंडलीकरण की संकल्पना कब प्रस्तुत हुई?

   a. प्रथम विश्वयुद्ध के बाद

   b. द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद

   c. 1990 के दशक के बाद

   d. 2000 के दशक के बाद

2. वैश्विक ग्राम शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किसने किया?

   a. जेम्स मिल　b. एडम स्मिथ

   c. मार्शल लोहान　d. अमर्त्य सेन

3. ब्रेटन -वुड्स सम्मेलन कब आयोजित हुआ?

   a. 1944　b. 1945

   c. 1946　d. 1948

4. ब्रेटन -वुड्स की जुड़वा संतान किसे कहा जाता है?

a. आई.एम.एफ. और डब्ल्यू.टी.ओ .को

b. विश्व बैंक और डब्ल्यू.टी.ओ. को

c. विश्व बैंक और ए.डी.बी. को

d. आई .एम .एफ. और विश्व बैंक को

5. समूह-77 किन देशों का संगठन है?

a. विकसित देशों का

b. विकासशील देशों का

c. औपनिवेशिक देशों का

d. इनमें से कोई नहीं

लघु उत्तरीय प्रश्नः-

1. भूमंडलीकरण से क्या समझते हैं?
2. कॉर्न लॉ से क्या अभिप्राय है?
3. समूह -77 के गठन के क्या उद्देश्य थे?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नः-

1. भूमंडलीकरण के विकास के विभिन्न चरणों का विश्लेषण करें।
2. ब्रेटन -वुड्स सम्मेलन की उपलब्धियों का विश्लेषण करें।

© JCERT not to be republished